श्री कृष्न किहा

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

दुरबाशे किहा सुण नाथ त्रैलोकी, कृष्न दिआं जणाईआ। किस बिध बिना भगती भगतां अंदर जगे जोती, प्रकाश करे रुशनाईआ। सुरती उठे सोती, नाम शब्द वज्जे शनवाईआ। चढ़न मंज़ल चोटी, अन्तर पन्ध मुकाईआ। वासना निकले खोटी, सुगंध नज़री आईआ। जन्म कर्म रहे ना रोगी, दुखड़ा दर्द मिटाईआ। मिले मेल संजोगी, विछोड़ा दए चुकाईआ। बणना पए ना जोगी, बनखण्ड फेरा पाईआ। बिन पढ़यां आवे सोझी, समझ मिले चतुराईआ। ठाकर मिले मौजी, मिल के रंग चढ़ाईआ। नाम निधान देवे बोधी, बुद्धि तों परे समझाईआ। चुक्की रक्खे गोदी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। श्री भगवान किहा ओ दुरबाशे एह भाव जाणे कोई ना लोकी, परलोक दए दुहाईआ। जिस उपर मेहरवान हो के श्री भगवान निरगुण धार सरगुण बण के खा जावे रोटी, रट्टे दो जहानां दए मुकाईआ। ओन्हां पढ़नी पए ना पोथी, पुस्तक बगल ना कोई उठाईआ। बुद्धि होए ना थोथी, स्वच्छ दए कराईआ। भाग लग्गे काया लोथी, चम्म दृष्टी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

कृष्न किहा सुण दुरबाशा रिखी, रखीशर दिआं जणाईआ। श्री भगवान दी धार तिक्खी, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। बहु बारीक निक्की नेत्र नैण ना कोई तकाईआ। जो जुग चौकड़ी देवणहार अगम्मी चिट्ठी, शब्दी वंड ना कोई कराईआ। करे खेल अनडिट्ठी, भेव अभेदा आपणे विच्च छुपाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रहे मिती, साल बसाला दए खपाईआ। लेखा जाणे आपणी थिती, वारता धुर दी आप वडयाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त तेरे वरगे भगत बणौणी आपणी सिखी, साख्यात आपणी दया कमाईआ। ओन्हां दी धार जाणी लिखी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द दी धार होणी बीस इक्की, वीह

इक्की पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी दात किसे नहीं दित्ती, सो पुरख अकाल देणी वरताईआ। वेखीं तूं वी करीं कोई ना छेती, छत्ती राग ना कोई वडयाईआ। मेरे बचन दी समझीं नेकी, निराकार हो के दिआं समझाईआ। साहिब सुल्तान दी इक्क टेकी, टिकटिकी इक्को विच्च लगाईआ। लहणा चुकणा सोढी बेदी, वेद शास्त्र देण गवाहीआ। पुरख अकाल औणा धुर दा भेदी, भेव आपणा दए खुल्ह़ाईआ। भगतां बणना हेती, गुरमुख लए जगाईआ। सारी सृष्टी रहे वेंहदी, बुद्धि समझ ना कोई समझाईआ। रीती बणाए धर दे नेहों दी, नाता आपणे नाल रखवाईआ। धार बख्श अमृत मेहों दी, अगनी तत्त दए बुझाईआ। मुहब्बत पा पिता पिउ दी, पूत सपूते गोद उठाईआ। शरीणी दे के धुर दे घिउ दी, घृत साचा लए उपजाईआ। एह खेल अगम्मी देउ दी, जिस नूं देवत सुर सीस निवाईआ। एह धार नहीं क्यों दी, किस्मत जन भगतां दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार वडयाईआ।

दुरबाशे किहा प्रभू की उह गुरमुख होवन सन्त, भगवान दे जणाईआ। श्री भगवान किहा ओन्ह़ां दे अन्तर देवां इक्को मंत, मंतव सभ दा हल कराईआ। दुरबाशे किहा की पछाण होवे विच्च जीव जंत, किस बिध करें रुशनाईआ। कृष्न किहा ओन्ह़ां दा मेला अन्त होवे श्री भगवन्त, नाता पुरख अकाल जुड़ाईआ । किसे दवारे करन ना मिन्नत, सीस अवर ना कोई झुकाईआ। जन्म जन्म दी मेट के चिन्नत, दुःख दर्द देण गवाईआ। सिँधे सचखण्ड दी जाण सिम्मत, दूजा राह ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओन्ह़ां देवे माण वडयाईआ।

दुरबाशे किहा की उह जपण तेरा नाम, कृष्न कह कह खुशी मनाईआ। कृष्न किहा नहीं उह सिमरन श्री भगवान, जो मेरा पिता माईआ। मैं तत्तां वाला निशान, थिर रहण कोई ना पाईआ । अक्खरां वाला दे के ज्ञान, गीता गुण जाणा समझाईआ। जिस नूं पढ़ के मिले मेहरवान, मुहब्बत मेल मिलाईआ। उह दाता दानी देवणहारा दान, जन भगतां दया कमाईआ । मैं बिदर दा खाधा पकवान, उह दलिद्दरी सारे पार कराईआ। जन्म जन्म दी मेट के काण, कायनात विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। चरन भूमिका दे के सच असथान, सच दवारे दए टिकाईआ। जिथ्थे दुरबाशा कोटन कोट कृष्न बैठे सीस निवाण, गोपीआं वाली रास ना कोई वखाईआ। ना जमना इशनान, गोकल बिन्दराबन ना कोई वडयाईआ। ना बंसरी धुनकान, ना मधुर धुन सुणाईआ। ना गऊआं दा चरवाहा गऊआं जाए चरवान, ना बछड़े मोड़ मुड़ाईआ। ना चिल्ला तीर कमान, ना रथ बणे रथवाहीआ । ना अरजन भीम नौजवान, ना दर्योध्न ज़ुलम कमाईआ। ना दुरबाशे वरगे फिरन विच्च बीआबान, ना कोई पट्टी पेट बंधाईआ। ना कोई मन दिसे शैतान, ना शरअ दिसे लड़ाईआ। ना विद्या वाला ज्ञान, ना अक्खरां वाली पढ़ाईआ। ना कोई लैण देण वाला इमतिहान, पाठशाला ना कोई वखाईआ। ना कोई बिरध बाल जवान, ना कोई सूरबीर चतुराईआ । ना कोई तत्तां वाला भगवान, दुरबाशिआ निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। सो सहज सुभाउ कर किरपा भगतां मिले माण, मिलणी जगदीश आपणे नाल कराईआ। दुखीआं दा दुःख

वंडा के खा जाए पकवान, पाक पवित्र दो जहान दए कराईआ। दुरबाशे किहा की ओस वेले ओस दा होवे नाम, मैनूं दे समझाईआ। कृष्न किहा उह आत्म परमात्म हो के ढोला गाए आपणा "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान", भाग सभ दे झोली पाईआ। सभ दा बदल देवे विधान, वाधा आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कर जाए कल्याण, इक्क इकल्ला कल्ला कल्ला लेखे लए लगाईआ। (२४ फग्गण शै सं १ भाग सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

. . . . . जन भगतो तुहाढ़ु अंदर इक्क रथवाही, जो दिवस रैण काया रथ चलाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाही, शहादत विच्च गुर अवतार पैगम्बर दए भुगताईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त निरगुण हो के भज्जे वाहो दाही, दो जहानां नौजवाना मर्द मरदाना आपणा पन्ध मुकाईआ। उह कदे रहण ना देवे कूड़ी शहनशाही, शहनशाह हो के साचा धर्म दए प्रगटाईआ। तुसीं आदि तों इक्क इक्को तुहाढ़ी इकाई, एका रूप नज़री आईआ। सिफ़रे वाली वधे ना कोई दहाई, दहाई दा सैंकड़ा सैंकड़े दा औंकड़ इक्को लैणा बणाईआ। जेहड़ी सिख्या अठारां ध्याए गीता रही समझाई, अरजन दा नाता बिधाते नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा मेला मेल मिलाईआ।

कृष्न कहे अरजन सुण अगम्मी बात, तैनूं दिआं समझाईआ। कलिजुग अन्तम मार झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस वेले सति धर्म ने पौणी वफ़ात, मुरदा होए लोकाईआ। भाई भाई विच्च नहीं नहीं इतफाक, घर घर विच्च एहो होए लड़ाईआ। कोई सन्त फ़कीर विरला जावे जाग, जिस दे अंदर रहमत आप कमाईआ। भज्जे फिरन पुतले ख़ाक, दह दिशा पए दुहाईआ । बिना पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा करे ना कोई इतफाक, अन्तर आत्म मेल ना कोई मिलाईआ। दुनियां रोवे इन्द्रिआं दे घाट, मंज़ल मुक्के ना किसे वाट, सेजा सोहे कोई ना खाट, जगत नटूआं होवे नाट, सवांगी दा सवांग समझ कोई ना पाईआ। एह खेल होणा तमाश, दीन मज़हब करन पसचाताप, हकीकी कलमा भुल्ले जाप, नव नौं चार वधे पाप, वंड पै जाए बुत्त ख़ाक, अलाह वाहिगुरू राम नाम राधे कृष्न दी आपस विच्च पए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

अरजन कहे दीनां नाथ की झगड़ा पए नाम भगवान, कुछ मैनूं दे जणाईआ। भगवन कहे ना हो हैरान, बिन अक्खां दिआं वखाईआ। जिंनां चिर कलिजुग विच्च सारी सृष्टी दी दृष्टी इक्क भगवन्त नूं ना समझे आपणा काहन, ओन्नां चिर जीव जंत सुक्ख कोई ना पाईआ। उह सभ दे अंदर वस्सया राम, जो देवे हक़ पैग़ाम, जिस दा पैगम्बर नूर निशान, निशानिआं दे निशाने दए बलाईआ। ओसे नूं कहणा मैहन्दी अमाम, ओसे नूं

कहणा निहकलंक बलवान, ओसे नूं कहणा कलकी अवतार नौजवान, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। ओस दा खेल होणा महान, जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा विधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ओसे नूं सीस निवाईआ। ओस ने सभ दा सांझा करना इक्क मैदान, मुद्दत दे विछड़े लैणे मिलाईआ। सारे सन्त भगत अज्ज ओसे अकाल पुरख दा कर दिउ ऐलान, जो अलामत कूड़ दी दए गवाईआ। एह देण आए फ़रमाण, मुनी जी पैदल चल के पन्ध मुकाईआ। सन्त किरपाल सिँघ जी बड़े जोधे बलवान, जिन्हां ने सूरबीरता विच्च आपणा कदम लिआ उठाईआ। की ऐधर आचारीआ शास्त्री जी वेखण खेल महान, द्वापर दा लेखा रहे समझाईआ। अग्गे कोई ना बणिओ नादान, नेत्रहीण ना कोई अखवाईआ। सारे सूरबीर हो के जोधे हो के आओ विच्च मैदान, धर्म दी चंडी आपणे हत्थ उठाईआ। साड्डा सारयां दा साचा इक्क इस्लाम, कादीआं दा हुणे संदेशा दे के गिआ पैग़ाम, परगणा बटाला इक्क दृढ़ाईआ। वेखयो किते गुर अवतार पैगम्बरां नूं कर ना दिउ बदनाम, मनमत दा राह चलाईआ । एह सन्त सज्जण जगत दी मेटण अन्धेरी शाम, शम्हा दीप करन रुशनाईआ। आओ मिल के सारे पीओ हकीकी जाम, जिस दा रस नशा उतर कदे ना जाईआ। एस युद्ध विच्च सन्त कोई करन नहीं आए कतलेआम, कातल मकतूल रूप ना कोई वटाईआ। सारे सुख नाल आत्मा परमात्मा दा सांझा करो ज्ञान, जिस नूं सोहँ कह के आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे गाईआ। किसे दर होइओ ना कदे गुलाम, एका परम पुरख पिता पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ।

युधिष्टर कहे दस्स कृष्न भगवन्त, त्रिलोकी नाथ तेरी सरनाईआ । की अगला होवे मंत, पड़दा दे चुकाईआ। कृष्न कहे सुण प्रभू दे सन्त, तैनूं दिआं समझाईआ। हुण द्वापर होया अन्त, कलिजुग अग्गे अक्ख खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कूड़ा वज्जणा डंक, बीसवीं नाल मिलाईआ। बोध अगाधा रहे कोई ना पंडत, बुद्ध बिबेक ना कोई कराईआ। गढ़ होवे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव ना कोई खुल्हाईआ। बिन अक्खरां तों मेरी एह सनद, जे हड़ी हत्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ ।

युधिष्टर कहे कृष्न लिख दे तहिरीर, अक्खरां नाल बणत बणाईआ। की खेल होवे बेनज़ीर, मैनूं दे समझाईआ। कृष्न किहा एह बिनां मुसवर तों खिच्चण वाली तस्वीर, जिस दा नकश सके ना कोई बणाईआ। जिस दी मर्यादा ओसे ने कलिजुग करना ताअमीर, तम्हा विच्च जगत देणा बदलाईआ। मन पातशाह ते ख़ाहश बणा वज़ीर, पंजां तत्तां उत्ते हकूमत देणी चलाईआ। हंगता दी प्रगट कर शमशीर, घर घर झगड़ा देणा पाईआ। हज़रत मूसा धुर दे कलमे दी दस्सणी तदबीर, तरीका नबीआं वाला जणाईआ। सारे मन्न लउ इक्को पीर, पैगम्बरां दा पैगम्बर नज़री आईआ। की खेल होणा अख़ीर नानक गोबिन्द दे के गए गवाहीआ। जे युधिष्टरा चिट्टे उत्ते काली पा दिआं लकीर, ओस नूं सके ना कोई मिटाईआ। सदा रमज़ां वाले हुंदे फ़कीर, फिकरे पढ़े कम्म किसे ना आईआ। एह

धर्म दा युध कोई ना होइओ दिलगीर, हौसले आपणे लउ वधाईआ। हत्थ विच्च कूड़ी रहे ना कोई ज़ंजीर, शरअ दे संगल देणे तुड़ाईआ । इक्क रूप हो जाओ शहनशाह पातशाह मुफलस ते फ़कीर, अमीरी ग़रीबी किसे नाल ना जाए परनाईआ। सांढूआं वाली रक्खयो ना कोई तकदीर, नाता इक्को नाल गंढुाईआ। जे उह मिल जाए फेर मंज़ल मिले अखीर, राह विच्च ना कोई अटकाईआ । काया दे अंदर मन दे नफ़र सारे दिसण हकीर, हिकमत चले ना कोई चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला पड़दा रिहा उठाईआ।

अरजन कहे कलिजुग विच्च कवण बणे रथवाही, जन भगतां रथ चलाईआ। त्रिलोकी नाथ कहे जो काहनां दा काहन बेपरवाही, जिस दा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। सदा सतिजुग त्रेता द्वापर जिस ने बदल दित्ती शाही, उह अन्तम कलिजुग वेख वखाईआ। ना उहदा पिता ना कोई माई, जननी गोद ना कोई उठाईआ। उह खेले खेल धुरदरगाही, जलवागर नूर रुशनाईआ। इक्क इकल्ला बण के पान्धी राही, लोक परलोक तबकां सबक इक्क समझाईआ। एहो जिहा पिच्छे कोई नहीं होया रथवाही, जो काया मन्दर अंदर वड़ के पंजां तत्तां दा रथ दए चलाईआ। त्रैगुण माया अग्गे भज्जे आपे वाहो दाही, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। जेहड़ी मंज़ल किसे हत्थ ना आई, उह प्रभू किरपा कर के भगतां दए वखाईआ। फिर सारे कहण हक़ खुदा तेरा नाम दुहाई, तेरा ढोला इक्को गाईआ। वेखयो किते हो ना जाए जुदाई, जुदा दा खुदा मालक नज़री आईआ। तुहाढु अंदर प्रीती होवे अग्गे नालों दूण सवाई, जिस दा अंकड़ा समझ कोई ना पाईआ। सन्त सुहेले सारे कहन्दे असीं भाई भाई, जे अंदरों हउमे दा बूटा पुट्ट दिउ बाहर कढु दिउ हँकाराई, रहमत आपे दए कमाईआ। क्योंकि सभ दा इक्को सांझा माही, जो मुहब्बत आपणे नाल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समेलन साची सभता दए वडयाईआ।

रथ कहे मैनूं कौण चलौंदा, वागाँ घोड़यां हत्थ रखवाईआ। चार कुण्ट दे विच्च भवौंदा, गेड़ा नज़र किसे ना आईआ। अस्त्र शस्त्रां तों बचौंदा, तीर पोह ना सके राईआ। भगतां दी प्रीती दे ढोले गौंदा, मुकट बैन कँवल नैण बन बिन्दरा निवासी मथरा दा साथी सोभा पाईआ। जिस दी कला किसे ना जाती, द्रयोध्न वरगे बण गए घाती, ओन्नां समझी नहीं बनबास वाली पाती, पत्रका दा पड़दा ना कोई उठाईआ । एह खेल पुरख अबिनाशी, जेहड़ी जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। अरजन ओस वेले जेहड़ा मनूं सचे सतिगुर दी आखी, सो खुशीआं विच्च आपणा झट्ट लँघाईआ। बाकी सभ नूं दिसे रैण अन्धेरी राती, निरगुण नूर ना कोई रुशनाईआ। सारयां लभ्भणा किथ्थे प्याला देवण वाला साकी, जो नाम सुराही दए उलटाईआ। जन भगत कहण जे किरपा करे आपणा मेल करे इतफाकी, इतफाकीआं आपणे नाल मिलाईआ। दीन मज़ब जात पात ऊँच नीच राओ रंक शाह सुलतान राज राजान शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश, चारे खाणी अंडज जेरज उत्भुज सेतज चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी, चारे वेद ओसे दा भेद, अञ्जील कुरान ओसे दा निशान, जिस दा निशाना सारे तक्कण थाउँ थाईंआ।

इक संदेशा सुणो श्री भगवान, जो सभ नूं रिहा सुणाईआ। वेखयो किते अंदरों रिहो ना कोई बेईमान, मन शैतान आपणा दाओ ना सके लगाईआ। साचे सन्तां दा करो चरन ध्यान, जिथ्थे मिले नाम निधान, मंज़ल हकीकी पहुंचो आण, जिथ्थे लाशरीक सोभा पाईआ। ना ओथे चिल्ला ना तीर ते ना कमान, ना कोई जोधा सूरबीर बलवान, ना कोई खड़ग खण्डा चमके विच्च मैदान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को साचा नाम दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिनां सन्तां दे चरनां दे थल्ले झुकदे ज़िमीं असमान, ओथे पैंडे मुकदे जगत जहान, जहालत रहण कोई ना पाईआ। सारे आपणा इक्क बणाओ सांझा विधान, जिस दी तरमीम अग्गे ना कोई कराईआ। आपणे निसचे नाल साची बुद्धि नाल अनभवता नाल उस नूं करो परवान, मन दी विचार अग्गे ना कोई रखाईआ। फेर सफ़ल होवो ते सफ़लता विच्च बणो बलवान, बल आपणा लैणा प्रगटाईआ। जे रथ तों उतर के अरजन आपणा नहीं कीता दान, दान दा मालक आपणा खेल आप खिलाईआ। सारे इक्ठे होए आण, इकत्तरता विच्च मित्रता विच्च साचा साथी बैठे बणाईआ। विषेश विद्या श्रेष्ट बुद्धि मन कल्पणा दवैश भावना अज्ज उह सांझा होवे घमसान, जोधे सूरबीर अंदरे अंदर लड़दे नज़री आईआ। जिनां नूं इक्क उत्ते विश्वाश, जिस दा नूर सर्ब प्रकाश, आदि जुगादि सदा अबिनाश, जन्म मरन विच्च ना आईआ। ओस प्रभू दी एकता वास्तो जिनां नूं मन्नज़ूर एह विधान, उह हत्थ खड़े करो नौजवान, परस्ताव पास कर के रिषीआं मुनीआं दे अग्गे दिउ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शास्त्री जी तुहाढ्ढे रथ दा वेख रस्ता, भगवान भगत मिलण दा मार्ग ससता, टकयां वाली भेट ना कोई चढ़ाईआ।

अंदर विचार पैदा कर लउ प्रभू दे साचे जस दा, नेत्र लोचण दीदार, कर लउ ओस दवार नेत्र अक्ख दा, जिस विच्च प्रतक्ख मिले बेपरवाहीआ। जिहड़ा खुशीआं विच्च हस्सदा, प्रेमीआं कोलों कदे नहीं नस्सदा, जद वेखो काया मन्दर अंदर वसदा, आत्म दी सेजा रिहा हंढाईआ। जिस दा महल्ल अट्टल उच्च मनारा कदे ना ढठ्ठदा, छप्पर छन्न ना कोई बदलाईआ। ओथे इक्को दीपक जगदा, जगमग जोत करे रुशनाईआ। ओथे दी करूगा शास्त्री जी भांबड़ अग्ग दा, जिथ्थे अमृत दी बरखा रिहा लाईआ। तुसीं नज़ारा वेखो अज्ज दा, घनघोर घटा चारों कुण्ट छाईआ। एथे सन्त फ़कीर मुनी मालक महिबूब जिनां दे हिरदे अंदर वसदा, बैठे सोभा पाईआ। नज़ारा लै लउ ओस रस दा, जिस रसते विच्च जांदिआं अग्गे ना कोई अटकाईआ। गुरमुखो दुःख वंडो टैहणी नालों सुॅके कॅख दा, दर्द वेखो विछोड़ा तक्को आत्मा दा परमात्मा नालों रहणा वक्ख दा, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। अग्गे हुण वक्त बणाओ सच दा, भाण्डा फुट्ट जाए काया माटी कच्च दा, मनुआ दहि दिशा ना फिरे नच्चदा, सति दा रस्ता लैणा अपनाईआ। एह समेलन सति धर्म जग्ग दा, जो पैंडा मुकावे उपर शाह रग दा, जिथ्थे अमृत सोमां वगदा, सुखमन टेडी बंक राह विच्च ना कोई अटकाईआ । वेखयो किते एथों जा के घर रूप ना बण जाइओ कॅग दा, हँसां दे हँस नज़री आईआ। एह कोई खेल नहीं अलपग दा, सूरा सर्बग सभ नूं दए वडयाईआ। तुसां फ़ैसला करना असां झगढ़ा छड्डणा मज़्बां वाली हद्द दा, हदूद

विच्च रहि के आपणा आप बन्द ना कोई कराईआ। ओस अनामी धाम दे मालक नद दा, जो नाद काया मन्दर अंदर रिहा सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण निराकार साकार प्रेम प्यार प्रीती मुहब्बत विच्च आपणे आप नूं आत्मा दे रूप विच्च परमात्मा हो के लभ्भदा, आपणा आप आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस दे हत्थ वड्डी वडयाईआ।

रथ कहे मैं बड़ा भज्ज भज्ज नट्ठा नॅठिआ दौड़, इधर उधर चक्कर लाईआ। रस्ता मार्ग रिहा ना कोई सौड़, क्यों मेरा रथवाही रथां दा मालक नज़री आईआ। जिध्धर वेखां उधर जाए बौहड़, बिनां रथ तों आपणा रथ वक्खरा लए चलाईआ। उह कोई कौरोकशेतर वाला नहीं जौहड़, पाणी वाला तालाब नज़र कोई ना आईआ। उह धुर दा काहन नौजवान निरगुण दाता पुरख बिधाता तुहाढ्ढे काया मन्दर अंदर जावे बौहड़, जिथ्थे पंज तत्त दा झगड़ा सके ना कोई मुकाईआ। ज़रा तक्क के वेखो नाल गौर, कौण तुहाढ्ढे मन्दर पावे शोर, अन्धेरा घोर कवण कराईआ। जे भगतो तुसीं समझे असीं होर ते परमात्मा होर, एह बात पुरख अकाल कदे ना भाईआ। सन्त सज्जण मीत मुरारे सभ नूं देवण आए सुग़ात, लेखे ला लउ अज्ज दी रात, अग्गे खुशीआं वाली होए परभात, परभाती दी सुग़ाती तुहाढ्ढी झोली पाईआ। सारयां दी सांझी इक्क बात, तुलबे बणके हत्थ फड़ो कलम दवात, सांझे नाम दी पट्टी लिखो साख्यात, असां दूई द्वैत करना नास, इक्को नूर वेखणा प्रकाश, जो एथ्थे ओथ्थे दो जहान देवे साथ, आत्मा दा रथवाही प्रभू रघुनाथ जिस नूं भगत राजा राम गिआ समझाईआ। हुण अग्गे रहण नहीं देणा कोई इखतलाफ, सन्त साजण पिछलीआं कीतीआं दी प्रभ नूं मिल के सभ दी खता करन मुआफ़, भुल्ल अग्गे ना कोई कराईआ। सारे प्रभ दे प्यारे बण के दस्स दिउ असीं वी सारे साध, साधां दी साधना नाल मता आप लिआ बणाईआ। इक्क नूं लउ अराध, जिस नूं राधे स्वामी कह के राधे कृष्न कह सारे रहे मनाईआ। उह आत्मा परमात्मा जिस दा सदा जुड़या रहे नात, आत्मा नालों होए ना कदे जुदाईआ। जे अंदर वड़ जाओ मन्दर चढ़ जाओ निरक्खर अक्खर पढ़ जाओ फेर तुहाढ्ढी समझ विच्च आए कि साड्डी कदे ना होए वफ़ात, आत्मा मरन जम्मण विच्च ना आईआ। तुहाढ्ढा खुदा पाक, तुसीं वी हो जाओ पाक, मन्न लउ इक्को बाप, जिस विच्च मजा सच चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सभ दा रथ, जो लत्तां पैरां नाल रिहा नट्ठ, नेत्र इशारयां नाल आपणी करवट लए वट्ट, रासां मलदे हत्थ फड़ाईआ।

हुण सन्तां महात्मां कीता इक्ठ, मुनी सुशील कुमार किहा आपणे भाशन विच्च उह सति दा सरूप इक्को जट्ट, जो सिध्धा सादा नज़री आईआ। सभ दे अग्गे जाए डट, सूरबीर आप अखवाईआ। सन्त महात्मा नूं अंदर वड़ के देवे दस्स, सहज नाल समझाईआ। इन्नां सारयां नूं कर लच वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। फेर कहीए शास्त्री जी श्री भगवान ज़रूर भगतां दा चलाए रथ, रथवाही हो के भगतां दा बेड़ा पार कराईआ। भगतो

तुसीं वी जाओ अग्गे डट, आकड़ नाल प्रभ नूं दिउ सुणाईआ। जे असीं तेरे ते तूं साड्डा क्यों साथों रिहा नठ्ठ, नेत्र अक्ख नैण शरमाईआ। असीं तैनूं गाईए बण के भट्ट, तूं करवट ना सकें वट्ट, बिरहों दा ला के फट्ट, विछोड़े विच्च तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रथ दा मालक इक्क बणाईआ।

रथ कहे मेरा मालक कौण, कवण रिहा चलाईआ। जिस दा लेखा पाणी पवण पौण, पारब्रह्म बेपरवाहीआ । जो दुष्ट सँघारी बणया राम रौण, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जिस दी मुच्छ दाहड़ी तन विच्च ना कोई धौण, धर्म दवारे बैठा डेरा लाईआ। जुग जुग उजड़िआं आए वसौण, विछड़यां मेल मिलाईआ। सोईआं सुरतीआं आए जगौण, नाम हलूणे नाल उठाईआ। सच दवारे आए बहौण, मन्दर इक्को इक्क वखाईआ। कूड़ी क्रिया आए ढाहुण, हँकारी बुरज रहण कोई ना पाईआ। साचा नाम आवे जपौण, संदेशा इक्क सुणाईआ। रोंदिआं आए हसौण, जिस तरां मुनी शुशील कुमार जी हस्स हस्स के सभ दी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ वेखे थाउँ थाईंआ।

श्री भगवान कहे मैं कलिजुग वेखां रथ केहड़ा केहड़ा, चारों कुण्ट ओर ध्यान लगाईआ। जिध्धर तक्कां उधर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ दिसे झेड़ा, झगड़ा रब्ब दे नाल रखाईआ। दह दिशा होवे मेरा मेरा, तेरा राग ना कोई अलाईआ। माया ममता पाया घेरा, घिरना विच्च लोकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तक्कया मंज़ल मंज़ल पाया फेरा, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। बहुत्तयां विच्चों थोड़यां सन्तां ने मुनीआं ने रिषीआं ने सूफ़ीआं कीता ज़ेरा, आप आपणा बल प्रगटाईआ। धरती दा खुल्ला करना विहड़ा, विच्चों हद्द बन्ने देणे बाहर कढ्ढाईआ। फेर आपे रहमत दा मालक करे मेहरा, मेहर दी बरखा दए लगाईआ। उह सभ दा मालक इक्क जो भय देण वाला रूप सिँघ शेरा, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दे हत्थ हकीकी नबेड़ा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। मालवे वालिओ ज़रा खेल वेखयो केरां, किरत कर्म दे विछड़े लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ दा रथवाही दाता धुरदरगाही नूर इल्लाही मुहब्बतां विच्च महिबूब, वसणहारा अर्श अरूज, आलीशान बेपरवाहीआ।

रथ कहे मैं जाणा किथ्थे, रस्ता नज़र कोई ना आईआ। कलिजुग जीव पैरां हेठां दब्बे, माया ममता मोह भार टिकाईआ। बड़े बड़े मोटे दूजिआं दी रत पी पी फिट्टे, आपणे आप नूं बलवान रहे बणाईआ। लड़दे फिरदे उपरों पत्थर इट्टे, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ इन्हां पिच्छे होए लड़ाईआ। वेखयो परम पुरख सन्त साजण सारे मिल के हुण दीन दुनी दे कढ्ढ देण सिट्टे, सिट्टेबाज़ी रहण कोई ना पाईआ। सभ दे लेखे होणे चिट्टे, कूड़ी क्रिया होए सफ़ाईआ। मार्ग लग्गणा सिध्धे, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। खुशीआं विच्च दो हत्थां दे तालीआं नाल पाओ गिध्धे, गीदी नज़र कोई ना आईआ। सन्त किरपाल सिँघ ने जिन्हां दे अन्तर तीर नाल विंधे, मुनी निशाना प्रेम वाला लगाईआ। प्रभ मिलण दी

दस्सी बिद्धे, बिधना दा लेखा दित्ता गवाईआ। उह भागाँ वाले किँडे, वड्डे सूरबीर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ।

शास्त्री जी आप ने भगत भगवान दा कीता बिआन, पवित्तर रसना नाल सालाहीआ। एह जट्ट दा विधान, वाहद नज़री आईआ । जिस दे मंनयां मिले कल्याण, कायनात कलमयां दी कलाम विच्चों पड़दा दए उठाईआ। वखावे उह निशान, जिस नूं बेनिशान कह के सारे रहे सुणाईआ। सन्त महात्मा मुनी इक्क प्रेम दा लै के आए तूफान, कूड़ी क्रिया नूं देण रुड़ाईआ। सूरबीर बहादर बणो नौजवान, नाम दा खण्डा हत्थ उठाईआ। तुहाढ़े अंदर रह ना सके कोई शैतान, शैतान ते रैहमान इक्क थां टिकण कदे ना पाईआ । तुसीं हुण तलवारां मैं सभ दा सांझा इक्क मिआन, मीआं बीवी वंड ना कोई वंडाईआ। धर्म सिआसत सिआसत धर्म धर्म दा रूप धर्म निशान, धर्म दी धार धर्मीआं विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ।

रथ कहे मेरा भौंदा वेखो पहीआ, चक्कर धरत वाला लगाईआ । कृष्न कहे अरजन सदी वीहवीं वेख कलिजुग डोलदी दिसे नईआ, नौका पार ना कोई कराईआ। सारे लभ्भण सच्चा सईआ, भज्जण थाउँ थाईंआ। बिन सतिगुर कोई ना फड़े बहीआ, अंग नाल अंग ना कोई जुड़ाईआ। जिध्धर तक्कण धर्म राए कढ्ढी बैठा वहीआ, चित्रगुप्त सभ दा लेखा रिहा सुणाईआ। अरजन कहे भगवन केहड़ी गल्ल कहीआ, कह के दित्ती सुणाईआ। ओस वेले की तूं वी लुक जाएंगा गोसाईआ, आपणी बंसरी नाम छुपाईआ । कृष्न किहा अरजन मैनूं उह सखीआं विसर गईआ, जेहड़ीआं विशियां विच्च हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा सुणाईआ।

रथ कहे मैं खाधे कई चक्कर, चकरवरती दित्ते खपाईआ । मेरा लेखा लिखया नहीं किसे सतर, इक्क लक्ख सतारां हज़ार सलोक सोभा ना कोई सुणाईआ। मैं रिहा खाली फक्कड़, फोकड़ रूप बणाईआ। जोध्धयां नाल जोध्धयां दी कराई टक्कर, घमसान वाली लड़ाईआ। कृष्न दवारे गिआ अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। जो कोई मैथों भुल्ल होई काहन मेरे सिर उत्ते मार थप्पड़, हथेली प्रेम वाली लगाईआ। मेरे उत्ते होवे तेरी मेहर दा असर, असुर रूप रहण ना पाईआ। सोहणा जीवण होवे बसर, जिंदगी विच्च वडयाईआ। कृष्न किहा ओ रथा तेरे विच्च अजे थोड़ी कसर, कसर इशारीए नाल मिलाईआ। जिस वेले कलिजुग सदी चौधवीं दुनियां दा खुदा नूं भुल्ल के होण लग्गा हशर, हस्ती जगत मस्ती विच्च भुलाईआ। फेर उह आपे लवे पकड़, डोरी आपणे हत्थ रखवाईआ। जिस ने तराज़ू विच्च नानक बण के तोलणा तक्कड़, सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द धार बणे रक्खक, रक्षा करे चाईं चाईंआ। जिस वेले आया ओस दा वक्त, आपणा नूर करे रुशनाईआ। साचा संदेशा देवे जगत, जागो जागो जागो सोया रहण कोई ना पाईआ। इक्क दे कोल इक्क दी शक्त, इक्क शक्त दे साचे भगत, भगतां विच्च होए व्यक्त, व्यक्तीगत ब्रह्ममत पारब्रह्म दी धार प्रगटाईआ। अरजन किहा भगवान मेरे नाल ला शर्त, की फेर

वी आवें परत, फेरा पावें उत्ते धरत, भगतां मनज़ूर करें अर्ज़, कृष्न किहा अरजन एह उस काहन दा फ़र्ज़, जो काहनां दा काहन नज़री आईआ। उह सभ दी वंडे दर्द, छुरी चलण ना देवे करद, किसे दा होण ना देवे हर्ज, दुखीआं दी मेटे मरज़, मरीज़ां दा डाक्टर इक्को नज़री आईआ।

अरजन किहा फेर की होवे फ़रक, कृष्न किहा उह दीन मज़हब देवे तरक, सभ दे काया मन्दर अंदर वड़ के लवे परख, पारखू इक्को नज़री आईआ । साचे सन्तां भगतां जोती जाता पुरख बिधाता परवरदिगार सांझा यार हो के देवे दरस, दरसी आपणा दरस कराईआ । खेले खेल अरश फर्श , ज़िमीं असमानां आपणी कार कमाईआ। सभ दी मेटणहारा हरस, हवस कूड़ी दए मिटाईआ। पूरब दा लेखा किसे दा रहण ना देवे कज़, मकरूज़ हो के सभ दी झोली दए भराईआ। एह खेल होणा असचरज, उह परमात्मा ना नारी ते ना मर्द, ना मीआं ते ना बीवी सदा आदि जुगादि बेअन्त, महिंमा अकथ्थ कथ ना कोई जणाईआ। जिस दे नूर उजाले साचे सन्त, जिन्ह़ां दा निशाना इक्क भगवन्त, दूजा राह ना कोई समझाईआ।

अरजन किहा भगवन उह केहड़ा होवे सम्मत, समां दे सुणाईआ । भगवन किहा अरजन जिस वेले गुरूआं दे चेले होण हराम नमक, सतिगुर दा बचन ना कोई कमाईआ। सृष्टी दी बुद्धि होवे अहिमक, भावें किसे दी धोती होवे भावें होवे तहिमत, भावें होवे बोदी भावें मंग के खावे रोज़ी, भावें दाड़ी खुल्ह़ी छड्ड के कहे मैं प्रभ बड़ा मौजी, प्रभ जिंनां चिर अंदरों ना देवे सोझी, बुद्धि कम्म किसे ना आईआ। अरजन दुनिया होणी हउमे दी रोगी, तृष्ना होणी भोगी, कोई विरला दिसे जोगी, जो मूंह उत्ते पट्टी बन्ह़ के पटेदारी दा लेखा दए मुकाईआ। किसे ने बन्ह़णी तेड़ लंगोटी, किसे ने चढ़ना उपर चोटी, किसे ने हत्थ विच्च फड़नी सोटी, किसे ने दस्सणा वखावां निर्मल जोती, किसे ना कहणा मैं सारे मालक लोक परलोकी, किसे ने पढ़ सुणौणी पोथी, कृष्न किहा अरजन जिस ने इक्क सति दी विचार सोची, सो सन्त मिले भगवन्त जिस दा संजम इक्को नज़री आईआ। कई होए जोगी, कई होए संजोगी, कई होए विजोगी, कई होए भोगी, कईआं चलौणे ख़ाने मोदी, कई अखवौणे बेदी सोढी, जिंनां चिर अंदरों कँवल दी खिले ना डोडी, अमृत बूंद सवांत ना पहुंची सो जगत वासना दा शौकी, उह शौकीनी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ।

पहीआ कहे मैं फिरदा फिरदा गिआ घिस, मेरी खल्ल दित्ती लुहाईआ। कृष्न की तूं मैनूं भगवान रिहा दिस, पड़दा दे उठाईआ । त्रिलोकी नाथ कर के आपणी पिट्ठ, पिच्छा लिआ बदलाईआ। हत्थ दी वखा के गिठ, सवा दित्ती वधाईआ। जे इक्क बचन रखें चित, चित ठगौरी कोई ना पाईआ। ओए रथा बिनां भगवन तों पक्का समझी कोई ना मित, अरजन वरगे पल्लू गए छुडाईआ। जे करना सिक्खणा ते सिखो इक्क दा हित,

जो हितकारी आप अखवाईआ। जेहड़ा प्रगट होवे नित्त नवित्त, जुग जुग वेस वटाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदिआं, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपणे नाम दी मारे खिच्च, बाहरों डंक ना कोई वजाईआ। रथ कहन्दा भगवन आपणे प्यार दी दे इक्क चिट, चिठ्ठी मेरे हत्थ फड़ाईआ। कृष्न किहा वेखीं किते भुल्ल के ना देवीं सिट्ट, मिट्टी ख़ाक विच्च रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्ह़ाईआ।

पहीआ कहे मैं रिहा भौंदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं ही तूं ही रिहा गौंदा, इक्को राग सुणाईआ। चरन धूढ़ी रिहा नहौंदा, दुरमत मैल धवाईआ। जिस वेले वेला वक्त आया मेरे गौं दा, मैं कह के दित्ता सुणाईआ। ऐ कृष्न की भुलेखा पावें आपणे नाउँ दा, नाम सिफ्त वाला बदलाईआ। की झगढ़ा मुक्के तन वजूद गराउँ दा, तन माटी वाला संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ ।

ओ रथ भगवन धुर दा सदा अदली, अदल इन्साफ़ इक्क कराईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे मज़ली, मंज़ल सभ दी वेख वखाईआ । दीन दुनी दी करे बदली, बदला आपणे हत्थ जणाईआ। जिस वेले कलिजुग माया ममता मोह वध गई, कूड़ी क्रिया होए हलकाईआ। फेर उह परम पुरख परमात्मा निरगुण रूप आवे जग लई, जिस विच्च जागरत जोत बिन वरन गोत सन्त फ़कीर करन रुशनाईआ। अबिनाशी करता जद आवे ते बुझौण अग्ग लई, अगला मार्ग इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाईआ।

पहीआ कहे मेरा आपणा आप होया चूर, साड़ के चूरमा दित्ता बणाईआ। युद्ध दी अग्ग ने कीता मनूर, मनुखां ने मनुक्खता दित्ती मिटाईआ। दरयोध्न दे हँकार मचाया फ़तूर, फ़तवा कृष्न ने दित्ता लाईआ। एह युद्ध होया ज़रूर, ज़रूरत सभ दी वेख वखाईआ। रथ कहे प्रभू मेरा की कसूर, भगत भगवान नूं चुक्क मैं भज्जया वाहो दाहीआ। कृष्न किहा रथा जिन्ह़ां दा मैं साथी उन्ह़ां दा डोब दित्ता पूर, आपणा भेव ना किसे खुल्ह़ाईआ। भाणे अंदर हुक्म अंदर सभ नूं होणा पए मजबूर, सिर सके ना कोई उठाईआ। समां बदलना प्रभ दा एह दस्तूर, सदा सद आपणी कार कमाईआ। ओए रथा, अग्गे होर अजे ओस परमात्मा दा नां होए मशहूर, ओनूं अलाह कह के सारे मलाह लैण बणाईआ। नानक निरगुण सरगुण होणा नूर, सतिनाम दए दृढ़ाईआ। गोबिन्द सति धर्म विच्च भरपूर, फ़तह डंका दए सुणाईआ। फेर कलिजुग विच्च वधणा कूड़, मूर्ख मूढ़ बणे लोकाईआ। उस वेले हकीकत दे मालक नूं आपणी सृष्टी दी दृष्टी नूं इष्टी बण के वेखणा पए ज़रूर, पूरब लहणा दए चुकाईआ। साचे सन्तो भगतो गुरमुखो प्रेमीओ प्यारिओ तुहाढ्ढे अंदर इक्को उस दा नूर, जिस नूर नाल एस तन विच्च होवे रुशनाईआ। अज्ज दा प्यार मुहब्बत विच्च सारे करो मंज़ूर, मंज़ूरी विच्च वज्जे वधाईआ। सन्त महात्मा रिषी मुनी सूफ़ी आचारीए जो इक्ट्ठे होए पैंडा मार के आए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एह उसे दी धूढ़, जो धूढ़ी टिक्के

सभ नूं दए लगाईआ। वेखिउ कोई बणे रिहो ना मूरख मूढ़, अन्ध अज्ञान अंदरों देणा कढ्ढाईआ। फेर सारयां दे बख्शे जाण कसूर, पुरख अबिनाशी घट निवासी परवरदिगार सांझा यार वली अल्ला अलाही नूर यामबीन कह के सभ दा शुकर मनाईआ। (२७ पोह शै सं ३)

.....सति धर्म कहे मैनूं वेला याद आया अरजन, अर्ज़ दिआं सुणाईआ। जिस वेले चौथा जुग शुरु होणा सी वेद अथरबण, अथरू नैणां विच्चों वहाईआ। घाओ होया अरबन खरबन, गिणती गणत ना कोई गिणाईआ। इक्क अकशूहणी दा लेखा अठाई लक्ख अनगिणती दा वज़न, तोला तोल ना कोई बणाईआ। भाई भाईआं नालों कर के वक्ख, दोवें धिरां दित्ते लड़ाईआ। ना शस्त्र फड़िआ हत्थ, रासां नाल सभ नूं लिआ घुंमाईआ। जिस वेले अरजन रथ तों उतर ते चरनां गिआ ढठ्ठ, निउँ के लागाँ पाईआ। कृष्न आपणा हत्थ रक्ख के उत्ते पट्ट, दोहरा ताल दित्ता वजाईआ। कीता खेल आपणा नटूआं नट, सवांग समझ किसे ना आईआ। करे खेल पुरख समरथ, हरि दाता धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

सुण अरजन, अरजन कहे नहीं, बेनन्ती इक्क जणाईआ। कुछ लेखा दस्स आपणे हिसाब खाते विच्चों वही, जिथ्थे कलम दवात लिखे कोई ना शाहीआ। भगवान किहा अरजन उहदी रसम चलणी नवीं, नवां राह प्रगटाईआ। तेरे प्यार दी पा के सही, सच दिआं जणाईआ। ओदों किसे ने पंडतां नूं खवौणी नहीं तसमई, खीरां दा पीर ना कोई मनाईआ। कुछ याद आ गिआ जेहड़ी कथा भरत नूं दस्सी कैकई, अंदर वड़ समझाईआ। बच्चयो मैं राम दी मां मतरेई, कुक्ख दा जम्मया इक्को नज़री आईआ। मैं दसरथ नाल गल्ल पक्की इक्क कर लई, जिहनूं मोड़ ना सके राईआ। आह वेख लै मेरी बही, जो पहीआ रथ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ।

अरजन कहे प्रभू मैं सुण लई तेरी अंदरों गीता, अठ्ठ दस वज्जे वधाईआ। कुछ हुक्म देवे सीता, राम दए दुहाईआ। अक्खां चुक के अरजन तक्क लै नाल नीझां, कलिजुग वेख वखाईआ। उस वेले प्रभ नालों टुट्टणीआं सभ दीआं मात प्रीतां, प्रीतम सच ना कोई मिलाईआ। झगड़ा पैणा मन्दर मसीतां, शिवदवाले मद्ध गुरूदवार गिरजे वंड वंडाईआ। सभ दीआं अंदरों बदलणीआं नीता, सति सच ना कोई कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वारो वारी सभ नूं मिल जाणीआं तवारीखां, भविख्तां विच्च समझाईआ। अन्त दी करयो इक्क उडीका, जोबन आपणे उपर ना कोई रखाईआ। किसे दवारे मंगण ना जावे भीखा, भीष्म पितामा गिआ सुणाईआ। किरपाचारज तिन्न मार के लीकां, दरोणाचारज नाल मिल के

करी सालाहीआ। दरबाशा जंगल विच्च खेल कर के अनडीठा, झगड़ा कृष्न नाल जणाईआ। भगवन किहा ओस वेले अरजन भगती भाव तों सभ दा खाली होणा खीसा, खालस नज़र कोई ना आईआ। अरजन कहे एह कौण वक्त, भगवन कहे उह बीस बीसा, वींहवीं सदी वेख वखाईआ। सभ नूं भुल्लणा राग छतीसा, छत्तरधारी धर्म विच्च धर्म ना कोई बणाईआ। नामा कहे उह खेल मेरे बीठलो बीठा, जो मेरी छप्पर छन्न छुहाईआ। ओस ने सभ दा बदल देणा तरीका, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। वसीअत करे बिन वसीका, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ । जिस वेले धर्म दवारयां विच्च सिआसत ने मारीआं चीकां, सारे रोवण मारन धाईंआ। ओस वेले पुरख अकाल करे सच प्रीता, प्रीतम हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ।

अरजन कहे जे मन्दर मसीत गुरूदवार मद्ध पै गिआ झगड़ा, की करू लोकाईआ। हे भगवन त्रिलोकी नाथ दस्स भेव अगला, अग्गे दे जणाईआ। जिस तरां मुनी शुशील ने किहा दूजे नंबर दिआं नूं जग कहे पगला, उह पगले तेरा नाम ध्याईआ। ते जेहड़े बाहरों बणे रहण बगला, मेरे वांग चिट्टे बस्त्र पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणी कार कमाईआ।

भगत कहे ऐ मेरे भगवान, अरजन आसा पूर कराईआ। कुछ बख्श के दान, कलिजुग जीवां झोली पाईआ। कृष्न ने अंदर उपर परे तों परे कर ध्यान, पारब्रह्म दा लेखा ब्रह्म दित्ता सुणाईआ। उस वेले सारे होण हैरान, हैरानी हर घट अंदर आईआ। मज़हबी दवारे बण जाण जगत दी दुकान, मुलां शेख़ मुसाइक पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी आपणा हट्ट चलाईआ। फेर किरपा करे आप मेहरवान, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। सति धर्म कर परवान, साचा राह इक्क बणाईआ। भगत दवारा प्रगट कर के विच्च जहान, जुग दे विछड़यां लए मिलाईआ। जिथ्थे ना कोई हिंदू सिख ईसाई ना कोई मुसलमान, पारसी बोधी जैनी दिसण भाई भाईआ। सति धर्म दा उथे मुनीआं ने कर देणा फ़रमाण, फरमांबरदार हो के सारे प्रभ दी सेव कमाईआ। एह बण जाए उह विधान, जिस दी तरमीम विच्च कलम सके ना कोई उठाईआ। तकसीम रहे ना कोई शैतान, ज़ेर ज़बर सारी देण गवाईआ। वाहद इक्क समझ रमज़ बुद्धि विच्च आवे इन्सान, इन्सान इन्सानीअत सभ दे अंदर टिकाईआ। एह कृष्न दा बिआन, अरजन दा ध्यान, दूजा दस्सण वाला नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल खिलाईआ।

अरजन कहे क्यों मेरा चलौंदा रिहों रथ, मेरी सेव कमाईआ। कृष्न घाह दे उत्ते बह के झट्ट, सहज नाल सुणाईआ। रक्ख के पिठ हत्थ, अंदरों अक्ख दित्ती खुल्हाईआ। अरजन भगत भगवान नहीं वक्ख, दोहां दा इक्को घर सोभा पाईआ। मैं हुण मार्ग रिहा दस्स, कलिजुग विच्च भगतां दे अंदर वड़ के उन्हां दा रथ चलाईआ। तुसीं मेरा गौंदे जस, फेर मैं भगतां दा ढोला गाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रतख, प्रशनां दा लेखा देणा मुकाईआ । इक्को नाम निधाना नौजवाना कर प्रगट, जगत दे प्रगटणे देणे मुकाईआ।

सच दा खोलू के हट्ट, धर्म दी दात इक्क वरताईआ। जो आवे सो लाहा जावे खट्ट, मनखट्टू रहण कोई ना पाईआ। क्यों मुनी ने किहा प्रभू सिध्धा सादा जट्ट, साड्डे अंदर वड़ के रोज़ी रिज़क रहीम हो के देवे चाईं चाईंआ। कुछ लेखा राम ने जाणया जेहड़ा बेटा दसरथ, पंचवटी विच्च लछमण दित्ता सुणाईआ। इक्क सुक्की टैहणी कट्ट, कटाकश दित्ता लगाईआ। सीता बोल पई झट्ट, स्वामी एह की खेल वरताईआ। राम किहा सीता आह वेख मेरा हत्थ, दर्द नाल भरया नज़री आईआ। कलिजुग विच्च मेरा प्यार मेरयां जाणा छड्ड, मन्दर विच्च सीता राम कह के माया ममता विच्च होण हलकाईआ। पर मैं राम, हर घट वस्सया राम, सभ तों न्यारा राम हो के देणा दस्स, जुलम अपराध विभचार दुराचार भरिष्टाचार विकार हँकार मोहे कदे ना भाईआ। ओस वेले प्रभ दी खेल वरते विच्च संसार, कलमा वेखे थाउँ थाईंआ। फिर राम दे नाम नाल कट्ट देणी कूड़ी धार, धरनी धरत धवल धौल उत्ते सति धर्म देणा लगाईआ। जेहड़े मेरे होण प्यारे सुगरीव दे भतीजे अञ्जण वरगे दुलारे, उह मुनीआं दा रूप वटाईआ । धरती नूं देण हुलारे कुकर्म नूं देण पिच्छाड़े, भाग लौण विच्च उजाड़े, उजड़िआं देण वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए मुकाईआ।

सीता कहे मेरे रघुपत, रघवंसी रघुनाथ मैनूं दे जणाईआ। राम किहा सीता किसे विच्च दिसदा नहीं सति, सत्तया नज़र कोई ना आईआ। सभ नूं भुल्लणी ब्रह्म मत, ब्रह्म वेता ब्रह्म ना कोई जणाईआ। जगत विकार ने अंदर पौणी नत्थ, सके ना कोई बचाईआ । विदवाना ने कथा करनी रसना नाल कथ, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। थोड़े समें बाद उह वी जाण छड्ड, रोटीआं कारन पेट वजाईआ। जिध्धर माया मिले उधर साधू वी जाण नट्ठ, चेल्लयां दे पिच्छे मिन्नतां कर कर के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सीता कहे महाराज की एह समां आवे वत, बेवतन होए लोकाईआ। राम जी हत्थ उत्ते हत्थ मार के पए हस्स, जिस सीता तैनूं ते मैनूं बनां विच्च दित्ता भवाईआ। उह राम सदा समरथ, जो तत्तां वाले गुर अवतार पैगम्बर मात प्रगटाईआ। ओस वेले किसे दा चलणा नहीं कोई वस, समें दा चक्कर सभ ते देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ।

लछमण सभ कुछ रिहा सुणदा, फिर करवट लए बदलाईआ। ऐ प्रभू कौण एस नूं छाणदा पुणदा, जो धर्म अद्धरम वेख वखाईआ। मैं ते जगत वेखदा खेल निरगुण सरगुण दा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। राम किहा भईआ लक्ष्मण एह कोई सौदा नहीं मुल्ल दा, कीमत वाला वणज ना कोई कराईआ। एह खेल ओस मालक कुल दा, जो कुल आलम विच्च बालम बण के खेल खिलाईआ। जिस दा सति धर्म निशाना झुलदा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर जिस दे निशान थल्ले सेव कमाईआ। उहदा खेल इक्क ब्रह्मे वाले नाभी कँवल फुल्ल दा, जिस दे विच्च झिरना रिहा झिराईआ। उहदा बूटा कदे ना हुलदा, राम कहे लछमण जो भगत लए उपजाईआ। जे कोई सुख लै लए ओस दी चरन धूल दा, दुःख दा लेखा दए मुकाईआ। सुक्ख माण लए ओस कन्त कन्तूहल दा, जो सीता

सभ दी सीता सुरती रिहा परनाईआ। ओस दा खेल सदा असूल दा, नियम विच्च काइदे विच्च मर्यादा विच्च मर्यादा परशोतम हो के आपणी कार कमाईआ। उह किसे तों पैसे टके नहीं वसूलदा, सीता कहे राम की करदा ? राम कहे भगतां अग्गे प्रेम दी झोली डाहीआ। प्रभू कोई मालक नहीं चुंगी वाले मसूल दा, चुंगीख़ाने सारे दए मिटाईआ। एह कोई लेखा नहीं किसे मज़मून दा, धुर दे राम दी राम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा सुणाईआ।

सीता कहे प्रभू क्यों फिरीए विच्च बनबास, भुक्खे रह के झट्ट लँघाईआ। राम किहा कुछ आ जा मेरे पास, तैनूं दिआं वखाईआ। थोड़ी जिही मीट आख, सिर सीस उत्ते टिकाईआ। पैहलों दित्ता उह प्रकाश, जिस प्रकाश विच्च प्रकाश सोभा पाईआ। फेर होर कीता विकास, द्वापर डगमगाईआ। कृष्न हो के भगतां दा रथ चलावे आप, रासां आपणे हत्थ उठाईआ। सीता दे अंदर थोड़ा आया पसचाताप, एह की कार कमाईआ। राम ने फेर किहा कुछ होर अग्गे झाक, तैनूं दिआं वखाईआ। सीता दा खोल्ह के ताक, पड़दा दित्ता उठाईआ। कलिजुग दी चौधवीं सदी विच्च दिसे ना कोई इन्साफ़, दरोही दरोही ख़लक खुदाईआ। ना कोई माई ते ना कोई बाप, पिता पूत करे लड़ाईआ। भैण भाई ते भाई भैण वल लैण झाक, एहो जिहा सीन दित्ता वखाईआ। स्त्री कोई नज़र ना आवे सीता जेहड़ी तेरे वांग फिरे विच्च बनबास, पतीवरता नज़र कोई ना आईआ। सारी दुनियां उतरे इन्द्रिआं दे घाट, कोई विरला साधू बच के आपणा झट्ट लँघाईआ। बथेरे माला मणके फेर के जै सीता राम दा करन पाठ, सीता सुरती मेरे नाल ना कोई परनाईआ। सीता कहे महाराज की एह तुहाढ्ढा सच होवे वाक, भगवन किहा सच दी कथा सुणाईआ। सीता किसे दा नहीं रहणा इतफ़ाक, मुहब्बत विच्च नज़र कोई ना आईआ। धर्म दा रहणा नहीं कोई राज, राजे शत्रु रूप वटाईआ। लछमण अग्गों कहे की फेर होवे महाराज पड़दा देणा खुल्हाईआ। राम हौली जिही दस्सया विच्च आवाज़, सहज नाल समझाईआ। ओस वेले किरपा करे आप, जेहड़ा जगत अक्खां नाल नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी दा मेट देवे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। उह सच्चयां सन्तां दा बणा के साथ, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। उह थालां विच्च दीवे पा के जगत आरती दी पावे कोई ना रास, घृत नाल ना कोई वडयाईआ। अंदर वड़ के खोल्हे ताक, पड़दा दए चुकाईआ। जिथ्थे सदा डगमगाहट, अठ्ठे पहर होवे रुशनाईआ। मंज़ल मेट के वाट, पान्धीआं पन्ध दूर कराईआ। सीता इक्क पाणी दा दे ग्लास, श्री राम जी मंग मंगाईआ। लछमण कर के झट तलाश, जल ठंडा लै के आईआ। राम दोहां नूं किहा कट्ठे हो के हत्थ जोड़ के निमस्कार कर के पूरा करो विश्वास, वास्ता राम नाल जुड़ाईआ। तुहानूं दुक्ख कोई ना रहे बनबास, मैं सदा तुहाढ्ढे पास, मैथों परे नहीं कोई ख़ास, हुण मैं तत्तां वाला बाहरों ते अंदरों पुरख अबिनाश, अबिनाशी दा रूप वटाईआ। लक्ष्मण मैं नहीं होणा नाश, एह तन माता पिता दा धरती उत्तों लिआ ते धरनी उत्ते देणा जलाईआ। मेरा ओस थां निवास, दूजा नज़र कोई ना आईआ। फेर मुड़ के आ जावां आप, बण के रथ रथवाहीआ। अरजन दा होवे साथ, बिनां जोड़ी तों राम रहण कदे ना पाईआ। एह खेल करां साख्यात, द्वापर वेख

वखाईआ। कलिजुग अन्तम निरगुण नूर जोत करां प्रकाश, वेद व्यास रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा रिहा उठाईआ।

अरजन कहे प्रभू तूं मेरे वेखे तीर कमान, चिल्ले ज़ोर नाल चढ़ाईआ। भगवन कहे वाह मेरे बलवान, एह तेरे विच्च वडयाईआ। ओए अरजन जे स्त्री नारी विधवा रंडी हो जाए विच्च जहान, ओस नूं उंगलां वाली तक्के लोकाईआ। अरजन हो गिआ हैरान, हैरानी अंदर डेरा लाईआ। जां वेख्या साढ्ठे तिन्न करोड़ रचिआ नज़री आया काहन, बिनां काहन तों अरजन दा तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। निउँ के निमस्कार कीती मैं बाल नादान, बच्चा नढ्ठा तेरा अखवाईआ। कृष्न किहा एह तेरी मेरी पहचान, दोवें मिल के साझां झट्ट लँघाईआ। ना मैं रथवाही ना रथवान, मैं मालक कुल्ल जहान तुहाढ्ठा रस्ता कीता आसान, सेवादार हो के तुहाढ्ठी सेव कमाईआ। एह रस्ता दस्सणा निम्रता विच्च ग़रीबी विच्च हलीमी विच्च रहो विच्च जहान, वड्डिआई कम्म किसे ना आईआ। जे अक्ख नाल तक्कणा ते तक्को श्री भगवान, जे मन नाल नस्सणा ते पुज्जो धर्म असथान, जे तन कोठे वसणा ममता शरअ ना रहे बेईमान, फेर अरजन तूं मेरा मैं तेरा साचा सज्जणा, खुशी प्यार दा देवां धूढ़ी मज़ना, नाम नेत्र ज्ञान पावां कजला, निझ नैण चक्षू शिव नेत्र इक्को दिआं खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ।

अरजन कहे की कलिजुग वरते कल, कल दे मालक दे समझाईआ। कृष्न किहा एह मेरा वल छल, धुर दी बाण चली आईआ। जिस वेले वेला वक्त आवे ओसे वेले करां गल्ल, पैहलों आपणा आप आऊट ना कोई कराईआ। अरजन कर्मां दा सभ नूं देणा फल, निहकर्मी हो के वेख वखाईआ। भगतां दा मेटणा द्वैत वाला सल, दूई दा डेरा ढाहीआ। जोती जाता हो के अंदर जावां रल, रल मिल आपणा झट्ट लँघाईआ। जेहड़ा लहणा देणा पूरब लेखा राजे बल, उह समग्री कलिजुग विच्च गुरमुखां कोलों वरताईआ। नाम संदेशा धर्म दवारे दा घल्ल, घायल कायल करां सृष्ट सबाईआ। जे कोई सच दे मार्ग जाए चल, चलदिआं चलदिआं राह विच्च ना कोई अटकाईआ। सीता फड़ के ग्लास जल, भगवन दे चरनां उत्ते दित्ता टिकाईआ। भगवन ने अग्गों हत्थां नाल लिआ ठग्गल, हत्थ हत्थ उत्ते रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान पड़दा आप चुकाईआ।

जल कहे क्यों मैनूं प्रभू चुक्कया, भेव देणा खुल्ह़ाईआ। निम्रता विच्च पुच्छयां, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगवन किहा कलिजुग अन्त सृष्टी दा बूटा दिसे सुक्कया, बिन राम दे पाणी हरा ना कोई कराईआ। ओस वेले बड़ीआं सिफ्तां नाल रागाँ नाल साजां नाल सभ ने पढ़नीआं ग्रन्थां वालीआं तुक्कया, उच्ची बोल बोल सुणाईआ। जिस वेले प्रभ ने ओन्हां नूं पुच्छया, आपणा आप सके ना कोई बचाईआ। जल कहे ऐ प्रभू की कोई तेरे नालों वी रुड्डयां, राम ने थोड़ा दित्ता हिलाईआ। ग्लास दे विच्च रक्ख के गूठया, फेर बाकी चारे उंगलां दित्तीआं छुहाईआ। ओ पाणी औह वेख चार वेद दा ज्ञाता मेरे नालों

रुस्सया, रावण दए दुहाईआ। जल कहे प्रभू तैनूं क्यों नहीं औंदा गुस्सया, गुस्ताख़ी अंदरों दे मुकाईआ। राम कहे एह धुर दा वर जिस दे कारन मैं लोकमात विच्च उठया, राम दा रूप वटाईआ। जल एह सभ दा बूटा जाणा पुट्टया, बिनां राम तों राम दी पए दुहाईआ। सीता वेख कलिजुग सभ दा दिसे काया खाली ठूठया, अमृत जल नज़र किसे ना आईआ। सारयां ने माया ममता नाल हउमे हंगता नाल विशयां विच्च रंग मानणा नाल झूटया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। ओस वेले राम दा राम नूर नुराना आपणी धार विच्चों आपे आवे फुट्टया, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। उह मेल लवे जेहड़े कर्म कर के टुट्टया, टुट्टयां गंढु पवाईआ। ओने चिर नूं इक्क गडरीया उथ्थों सीता फल दा लै के आ गिआ गुच्छया, पंज पंज नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्ह़ाईआ।

सीताफल कहे मैं होया फली भूत, पंज भूत मिले वडयाईआ । मेरा ताणा पेटा इक्को सूत, सूतरधारी दया कमाईआ। मैं कर के आया कूच, कूचा गली फेरा पाईआ। वेख मैनूं एह पुराणा दुःख, दुःख दर्द ना कोई मिटाईआ। धन्न भाग जे मैनूं किसे लिआंदा चुक्क, राम दी भेट चढ़ाईआ। मैं तक्क के एस दा मुख, आपणा जन्म लिआ बदलाईआ । एसे कारन गुरू गोबिन्द नूं प्रगटौणे पए पंज सुत, जिन्ह़ां नूं पंज प्यारे कह के सारे गाईआ। सीता कहे प्रभू दस्स होर कुछ, भेव अभेद खुल्ह़ाईआ। राम किहा मैं ओस वेले तत्त वजूद नहीं रक्खणा, सरीर नहीं रक्खणा, आपणयां सन्तां भगतां दे काया मन्दर अंदर विच्च लुकणा ओस गुठ, जिथों जगत अक्खां वाला वेखण कोई ना पाईआ। अंदरे अंदर लवां पुछ, शब्द शब्दी धार मिलाईआ। सच दी दे के सुच्च, सति दे नाल करां कुड़माईआ। बण के अबिनाशी अचुत, चेतन्न सुरती दिआं कराईआ। सीता जुग चौकड़ी राम दी मंज़ल गई कदी नहीं मुक्क, पान्धी दा पन्ध ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ।

सीता कहे प्रभू की फेर आउँगे। आपणी दया कमाउँगे। सति दा डंक वजाउँगे। ब्रह्म मत दा सबक पढ़ाउँगे। निझ नेत्र अक्ख दा पड़दा लाहोंगे। उजड़ी दुनियां फेर वसाउँगे। जंगल बेलिआं विच्च फिर के झट्ट लँघाउँगे । की सीता आपणी नाल लिआउँगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, की अगली रास रचाउँगे।

राम कहे मैं आवांगा। निरगुण सरगुण खेल खिलावांगा। काहना कृष्ना रूप वटावांगा। सीस ताज इक्क टिकावांगा। मुकन्द मनोहर लखमी नरायण आप अखवावांगा। भगत सुहेला बण के सोभा पावांगा। ग़रीब निमाणे गोद उठावांगा। हँकारीआं गढ़ तुड़ावांगा । कन्या दी लाज रखवावांगा। जमना ते सोभा पावांगा। गोपीआं दी रास रचावांगा। निझ नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह़ावांगा। मुकट बैण सोभा पावांगा। तख्त ताज सर्ब उलटावांगा। धर्म जैकार इक्क जणावांगा। भगतां दा रथवाही बण के रथ चलावांगा। गीता दा ज्ञान अठ्ठ दस, अठारां वंड वंडावांगा। अमृत दे के रस, निझर झिरना इक्क झिरावांगा। अन्तम सभ कुछ

कर के भट्ठ, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमावांगा।

राम कहे मैं जुग जुग वेस वटौंदा हां। जुग चौकड़ी खेल खिलौंदा हां। बोध रूप आप धरौंदा हां। ईसा मूसा मुहम्मद कल वरतौंदा हां। नानक गोबिन्द डंक सुणौंदा हां। फिर आपणा आप जणौंदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार इक्क सुणौंदा हां।

सीता, मैं तेई अवतार ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द खेल खिला के जावां छुप, जगत नेगत नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी विच्च हो जाए अन्धेर घुप्प, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ के कोई हउमे दा मिटा सके ना दुःख, किउं विश्वाश घाती होए लोकाईआ। धर्म दवारे रहे ना कोई सुच्च, ठग्ग चोर यार धीआं भैणां लैण तकाईआ। जगत साधां सन्तां दे भेखां वाले फिरने वग्ग, ओन्हां दा वागी नज़र कोई ना आईआ। जिध्धर वेखो चार कुण्ट लग्गी अग्ग, अगनी अग्ग ना कोई बुझाईआ। सीता कहे महाराज, की पाप दी वी कोई हद्द, एह वी भेव खुल्हाईआ। राम किहा सुण लै मेरा नद, जो शब्द वाला सुणाईआ। जिंनां चिर एह खेल ना होवे विच्च जग्ग, ओन्हां चिर राम नूं औण दा कल विच्च कोई मौका देवे ना राईआ। फेर सारे दुक्खां विच्च लैण सद्द, ओ धुर दे राम, ओ धुर दे कान्ह, ओ धुर दे अमाम, ओ धुर दे भगवान, धुर दा दे दान, तेरा धर्म झुल्ले निशान, निशाने सारे दे मिटाईआ। तूं दाता मेहरवान, किऊँ विच्च वाड़िआ सभ दे शैतान, शरअ कीती बेईमान, साबत रिहा ना किसे दा ईमान, एह सारे तेरे इन्सान, किऊँ इन्सानीअत दित्ती गवाईआ। सीता ओस वेले फेर मैनूं आपणे भगतां दी ज़रूर करनी पए पहचाण, जोती जाता हो के फिरां विच्च जहान, काया दे मन्दर वेखां छड्ड देवां जगत मकान, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवार कदे ना जाईआ। मेरा जदों बणया सुहञ्जणा भगतां दे नाल विधान, कृष्न ते अरजन मेरी दे के जाण गवाहीआ। कागद कलम नाल लेखा लिखणा महान, कातब चले ना कोई चतराईआ। एह अगम्मी फ़रमाण, जेहड़ा अज्ज तक्क नहीं आया किसे दे विच्च ध्यान, अक्खरां विच्च बन्द ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ दा रथवाही आपणी खेल खलाईआ।

अरजन कहे की भगवन तेरा खेल, पड़दा दे चुकाईआ। किस बिध लवें मेल, आपा जोड़ जुड़ाईआ। भगवन किहा मेरा प्रकाश बिन बाती बिन तेल, घर घर करां रुशनाईआ। मैंनूं भगतां नूं मिलण दा सदा वेहल, होर कम्म कम्म किसे ना आईआ। जेहड़ा मैंनूं भुल्ले राम कहे उह मैं धक्क देवां धर्म राए दी जेल्ह, चित्रगुप्त लेखा सुणा के चुरासी विच्च सुटाईआ। जे मन्ने सीता हुण तक्क सभ तों नवेल, वक्खरे घर डेरा लाईआ। जिथ्थे पुहँचण विच्च सारे हो जाण फेल्ह, जे मैं आपणी किरपा करां मातलोक विच्च निरगुण लवां मनाईआ। एसे कर के मैंनूं ईसा मूसा मुहम्मद सारे कहन्दे बाप, पिता पुरख अकाल कह

के गोबिन्द गिआ गाईआ। जे कोई मेरा मजमून मेरा कानूंन लए वाच, विचार दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरा सभ तों वक्खरा बाग़, जिथ्थे चार जुग दा हिसाब, बिनां अक्खरां तों किताब, रक्खी हक़ महराब, जिथ्थे नवाब शहनशाह इक्को नज़री आईआ। ओस दे अग्गे सारे हो जाण ला-जवाब, जिस वेले जवाब तल्बी विच्च गुर अवतार पैगम्बरां पुछ पुछाईआ। सीता कुछ होर दिसदा कोई नानक दा खेल होणा विच्च बगदाद, बगलगीर हिंदू मुस्लिम लए कराईआ। गोबिन्द दी पुरख अकाल ने करनी इमदाद, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। फेर सदी चौधवीं आपणयां भगतां दी खोलणी जाग, सूफ़ीआं सन्तां लए उठाईआ। अंदर दे के वैराग, वैरी दी वैरीआं नाल सुलहा देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

अरजन कहे मेरी आरज़ू इक्क ख़ाहश, बेनन्ती दिआं सुणाईआ। की प्रभू तैनूं भगत करन तलाश, बण खण्ड खोजण जाईआ। कृष्न ने किहा अरजन मैं जदों मिलां ते भगतां नूं मिलां आप, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। इक्को दस्सां जाप, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। जिथ्थे ना कोई पुंन ना कोई पाप, ओथ्थे भगत भगवान रह के आपणा झट्ट लँघाईआ। एह जिन्नां नूं पूरा देवां विश्वास, विशिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। उह सदा वसण मेरे पास, एथ्थे ओथ्थे होवे ना कदे जुदाईआ। किऊँ राम सर्ब गुणा गुणतास, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जुग जुग जन भगतां दी पूरी करे आस, सूफ़ी सन्त फ़कीरां आपणे राह चलाईआ। अरजन कहे प्रभू मैं हैरान किथ्थों सिखी जाच, दरोणाचारज कोल पढ़न कदे ना जाईआ। किरपाचारज तेरे हत्थ विच्च कदी नहीं फड़ाई रास, गोपीआं नाल खेल के आपणा झट्ट लँघाईआ। सारयां नालों कर के बाईकाट, किऊँ अरजन दी सेव कमाईआ। भगवान हस्स के किहा अरजन आह वेख मेरा मस्तक माथ, अरजन नेत्र नैण उठाईआ। जां वेख्या उहदे विच्च दोहां दी इक्क जात, दूजा नज़र कोई ना आईआ। कृष्न कहे औह तक्क अरजन कलिजुग दी अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। ओस वेले भगत भगवान दा जिन्नां चिर ना बणया समाज, ओन्नां चिर सृष्टी दी दृष्टी सुख विच्च ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेख कराईआ।

सीता जोर नाल कंबी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जां वेख्या किसे दी धोती किसे दी तंबी, कोई तहिमत वाला नज़री आईआ। सभ दे उत्ते मज़हबां दी पाबन्दी, शरअ विच्च डर के प्रभ नूं गए भुलाईआ । कोई कहे मेरी राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नाल पई गंढ्ढी, कोई नानक गोबिन्द ओट तकाईआ। कोई कहे साड्डी रसम रिवाज चंगी, मुछ दाहड़ी केसां नाल सुहाईआ। सीता कहे, हाए राम मैंनूं सभ दी आत्मा ओस राम नालों विछड़ी दिसे रंडी, कन्त सुहाग नज़र कोई ना आईआ। भावें कोई तीर्थ नाहवे गोदावरी जमना सुरसती गंगी, जिंनां चिर मेरे प्रेम दी चढ़े ना अंदर रंगी, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। भावें नाह धो मुख सवार जगत वैरागण मेंढी सीस वाहवे कंघी, बिन्दी तिलक संधूर लगाईआ। उह वी भागाँ मंदी, जिन्नां नूं मिल्या ना राम बेपरवाहीआ। भावें कोई रोज़ सेवा कमाए

पिण्डी, अष्टभुज जोत ज्वाला सिँघ सवार शस्त्रधारी किरच कटार करे नंगी, लाल भूशण सोभा पाईआ। जिंनां चिर प्रभू दे नाम दी अंदरों ना आए सुगंधी, ओनां चिर पाबन्दी ना कोई कटाईआ। सीता कहे प्रभू मैं की दस्सां मैनूं कलिजुग दे विच्च बड़े बड़े बड़े जगत साध दिसदे पखण्डी, जो परवण्ड विच्च लोकां दीआं धीआं भैणां लै के नट्ठ जाईआ। लछमण किहा ओ सीता मैं बड़ा सूरबीर जंगी, जगत दा मालक इक्क अखवाईआ। जिस वेले मेरे राम दे प्यारयां वल अक्ख कीती नंगी, मैं सिर धड़ अड्ड दिआं कराईआ। प्रभू दे प्यारयां नूं सदा पवण आवे ठंडी, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। तुसीं सभ ने वेख्या मुनी सुशील कुमार किस तरां फिरदा सी पैरीं नंगीं, इस तों वड्डी होर सीता केहड़ी नज़री आईआ। एह किसे दवारिउं मंग नहीं मिलदी मंगी, आपणी कमाई आपणी सुरती आप परनाईआ। आपे धी आपे जवाई, सहुरा पेईआ आपे आप अखवाईआ। एहे खुशी जिस दी सदा वज्जदी रहे शहिनाई, ढोल ढमम्कयां विच्च जगत दी होवे कुड़माईआ। भगतां विच्च भगवन प्रेम दी धार चलाई, शादीआं वालिउ सुण लउ कन्न लाई, इक्क दूजे नालों कदी नहीं करनी जुदाई, नार कन्त सांझा मिल के झट्ट लँघाईआ। सेवा विच्च रहे ना कोई ऊणताई, पतीबरत हो के साचा मार्ग देणा वखाईआ। पती ने कदी नहीं बणना कसाई, बिनां सोचे समझे आपणी नारी नूं दए सताईआ। दोहां दा सांझा प्यार ते इक्को वाग रखाई, धर्म दी धार जन्म दी गंढु नाता जोड़ जुड़ाईआ। सभ संगत प्रेमी प्यारयां गुरमुखां दे अंदर रहे ठंड, क्यों रिषी मुनी सन्त महात्मा फ़कीर फ़क्कर मिल के सोहणा काज रचाईआ। धर्म समेलन जे सदा धर्म दे रहणा पाबन्द, इक्ट्ठे हो के आपणा राह अपनाईआ। जिध्धर जाओ चार कुण्ट दह दिशा उच्ची कूक बोलो तूं मेरा मैं तेरा छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। आत्मा परमात्मा सदा चित अनन्द, अनन्द दा अनन्द अनन्द विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म दोहां दा सच निशान, सति धर्म दा इक्को इक्क वखाईआ। (२८ पोह शै सं ३)

सतिगुर शब्द सदा सर्बग, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद अखवाईआ। नित्त नवित्त प्रगट होवे जग, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। जन भगत सुहेले लए लभ्भ, सन्त सज्जण वेख वखाईआ। जोती धार दर्शन देवे उपर शाह रग, नौं दवारे डेरा ढाईआ। मन ममता त्रैगुण माया बुझा के अग्ग, अमृत मेघ दए बरसाईआ। जगत वासना पार कर के हद्द, गृह मन्दर इक्क सुहाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मी नद, धुन आत्मक राग अलाहीआ। जोत धार होवे प्रगट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सच दवार वखा के हट्ट, महल्ल अट्टल इक्क वडयाईआ । जिथ्थे साहिब वसे समरथ, पतिपरमेश्वर आसण लाईआ। जिस दा रूप रंग रेख सक्कया कोई ना दस्स, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कह के सारे गाईआ। सो लेखा जाणे अलखणा अलक्ख, अलक्ख अगोचर आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

जिस ख़बर संदेशा दित्ता सनकादक सन्त कुमार, इक्क इक्क जणाईआ। जिन बराह दी बध्धी धार, आपणा बल प्रगटाईआ। यगै पुरुष दी पैज सवार, हाव गरीब लई अंगढ़ाईआ। नर नरायण हो त्यार, दत्तात्रै वेस वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार, जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। कपल मुन कर के ख़बरदार, सांख योग दित्ता समझाईआ। रिखव देव पर्दा लाह अपार, प्रिथू आपणा रंग चढ़ाईआ। मतस वड़ के जलधार, कछप मिन्दरा पिठ उठाईआ। धनंतर हो के पाई सार, औशद रूप बदलाईआ। हँस बावन हो के ख़बरदार, सोहणी आपणी कार कमाईआ। हरी हरि खेल अपार, गज लेखा दित्ता चुकाईआ। परस राम रूप निराकार, ब्राह्मण ब्रह्म विच्च वडयाईआ । राम रामा हो उजिआर, दशरथ लेखा दित्ता चुकाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, अख़शरां अक्ख़रां विच्च बदलाईआ। काहना कृष्ना मीत मुरार, नाम बंसरी धुन सुणाईआ। लेखा वेख जगत संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लए बुलाईआ। कुमेर अंदर सद्दे सच दरबार, दर दरबारी सोभा पाईआ। खेल कीता अपर अपार, त्रैलोकी नंदन आपणी कार कमाईआ। माया छाया रूप धर निराकार, साकार विच्च निरगुण जोत लई लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा इक्क खुल्ह़ाईआ।

कृष्न कहे मैं घनीआ काहन, काहना रूप वटाईआ। सोलां कलां जगत निशान, नौं सत बराट मेरी वडयाईआ। मेरा खेल मेरे ज़िमीं असमान, चौदां तबक आपणे विच्च लुकाईआ। चौदां लोक मेरे अंग निशान, निशाने सभ नूं दए दृढ़ाईआ। कौरो पांडो खेल कीता महान, महिमा आपणी आपणे विच्च टिकाईआ। विद्वानां नूं बुद्धि विच्च कीता परेशान, अकल बुद्धि दी चले ना कोई चतुराईआ। साक सनबंधी सारे वैरी हो के इक्क दूजे नूं तकान, दुश्मण दुश्मण रूप वटाईआ। ना द्रोणाचार्ज दी विद्या रही ना कोई ज्ञान, शत्रु शस्त्रधारी हो के दित्ते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

कृष्न कहे मैं आया बण घनईआ, शाम शामा रूप धराईआ। द्वापर अन्तम वेरवी नईआ, नौका तक्की जगत लोकाईआ। सारयां दा बण के सज्जण सईआ, सनबंधी सारे लए बुलाईआ। लेखा रक्ख के सभ दा गुज्झा आपणी बहीआ, परदा सके ना कोई उठाईआ। प्यार नाल सतिकार नाल विहार नाल फड़ के बहीआ, भाई भाई दित्ते उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ।

कृष्न कहे मैं त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण अतीता नज़री आईआ। जोती जाता शब्द गुरू दा साथ, साख्यात आपणी कार कमाईआ। रथवाही बण के चलाया राथ, महांसारथी नाउँ प्रगटाईआ। अरजन दस्सी गाथ, ज्ञान ज्ञान विच्चों उपजाईआ। ना कोई तेरा सज्जण ना कोई साक, कुटंबी नज़र कोई ना आईआ। धर्म युद्ध विच्च लग्गे कोई ना पाप, पत्तित पुनीत दित्ता समझाईआ। फेर वखाया जिध्धर वेख मैं आपे आप, दूजा नज़र कोई ना आईआ।

बिनां अक्खां तों वेख मेरा परताप, दो जहानां सोभा पाईआ। मैं ही ब्रह्म मैं भगवान मैं ही जाप, जीवत जप तप आप अखवाईआ। मैं ही रोग मैं ही सोग, मैं ही चिन्ता दुःख भोग, मैं ही संयोग मैं ही वियोग, मैं ही वैराग मैं ही त्याग, मैं ही कन्त सुहाग, सभ दा नज़री आईआ। तेरी खोलूं जाग, तैनूं अगला दस्सां भाग, जिस नूं समझे कोई ना साध, रिषी मुनी बैठे ध्यान लगाईआ। एह अगम्मी कही बात, ना ओस वेले दिन सी ना रात, घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। एह शब्द सुणाया, बिन रसना गाया, अन्तर आत्मक धुन उपजाया, अरजन इक्क ज्ञान जणाया, बिनां बोलण तों अनबोलत दित्ता सुणाईआ। कृष्न हैरानी विच्च शैतानी विच्च बेईमानी विच्च इन्सानी विच्च मेहरवानी विच्च आपणा भेव खुलाया, सहज नाल हत्थ पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। जो उपजया सो रहण ना पाया, धर्म युद्ध दी रचना दित्ती जणाईआ। एह मेरा खेल ते मेरी माया, बेपरवाही विच्च समाईआ। खण्डा खड़ग तीर कमान चिल्ला नहीं कोई उठाया, धनुश हत्थ ना कोई टिकाईआ। हर हिरदे विच्च आपणा नाम अगम्मा तीर छुहाया, सोई सुरती सभ दी दित्ती जगाईआ। जां वेख्या चारों कुण्ट गर्दी गुबार अन्धेरा छाया, हाहाकार मच्ची लोकाईआ। अरजन हत्थ बन्नू के सीस निवाया, चरन चरनोदक लै मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ओने चिर नूं युधिष्टर आया, धर्म दा बेटा आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस ने हस्स के हत्थां उत्ते हत्थ वजाया, सोहणी खुशी दित्ती बणाईआ। मेरे काहन जी, मेरे भगवान जी, मेरे दाता दानी दीन दयाल जी, मेरे काल महांकाल जी, मेरे पूजय सची धर्मसाल जी, मेरे शिवदुआले मट्ठ मेरे मन्दरां दे मन्दर मेरे जोती नूर नुरान जी, मेरी इक्क ते अनेक अनेक तों इक्क प्रनाम जी, जरा सच दस्सो केहड़ा ज्ञान जी, जिस दे नाल लक्ख चुरासी दे बंधन मिट जाण जी, आवण जावण मात गरभ ना कोई फेर तपाण जी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

कृष्न किहा युधिष्टर आ गिआ फिरदा तुरदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। पेशानी उत्ते हत्थ मारया सृष्टी वेख सारी मुरदा, बिना मेरी किरपा तों जीवत नज़र कोई ना आईआ। जरा खेल वेख देवत सुर दा, इन्दर इन्दरासण सिँघ सिँघासण बैठे ध्यान लगाईआ। एथ्थे कोई खेल नहीं बल ज़ोर दा, ताकत वाली ना कोई वडयाईआ। मैं त्रैलोकी नंदन सभ नूं विछोड़दा सभ नूं जोड़दा, एह मेरी बेपरवाहीआ। बेशक मैं रथ रथवाही चार घोड़ दा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ । जरा खेल वेखणा शोर दा, चारों कुण्ट हाहाकार मच्चे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए लिखाईआ।

युधिष्टर किहा कृष्न मैं वेखे सारे मूरछत, मूरती सभ विच्च इक्को तेरी नज़री आईआ। तूं मालक द्वापर वाले पूर दा, पुरीआं लोआं तेरा राह तकाईआ । तूं गढ़ तोड़ना गरूर दा, हँकारी दर्योध्न लिआ उठाईआ। एह खेल तेरा दस्तूर दा, जुग जुग आपणी कार भुगताईआ। जेहड़ा हुक्म तेरे मनज़ूर दा, उह वरते थाउँ थाईंआ। अैं जापदा जगत शमशान भूमी रूप बणया तन्दूर दा, अगनी आपणा रंग वखाईआ। एह शरीर पंज तत्त नाता कूड़ दा, लोकमात रहण ना पाईआ। दस्स किस तरां लेखा मुक्कदा एस जीव शरूड दा, सहज

देणा समझाईआ। कृष्न कहंदा युधिष्टरा जो हाज़र सो चरनोदक लै मेरी धूढ़ दा, जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं आसा मनसा सभ दी पूरदा, सारे मेरा ब्रह्म ते मैं ब्रह्म दा मालक ब्रह्म ब्रह्म विच्च समाईआ। युधिष्टर हस्स के किहा स्वामी जिस वेले तेरे पिच्छों वक्त हो गिआ दूर दा, तैनूं मिलण कोई ना पाईआ। कृष्न किहा ओस वेले कलिजुग समां होणा मूर्ख मूढ़ दा, बुद्धिवान बुद्धि देण गवाईआ। मैं इक्क जगत रीती खेल दस्सां दस्तूर दा, जगत करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ।

झट्ट अरजन बोलया तूं मैनूं दस्सया इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, सभ कुछ दित्ता वखाईआ। मैं तक्कया तेरा अनन्द, तेरे अनन्द विच्च समाईआ। सवैम तूं सवैम मैं सवैम तेरा परमानंद, अनन्द विच्च परमानंद लिआ मिलाईआ। दस्स, जगत तेरे पिच्छों कुछ काल गिआ लँघ, तेरा दरस कोई ना पाईआ। जिन्नां दी तूं शहादत लैणी विच्च जंग, धर्म युद्ध विच्च देणा लड़ाईआ। उन्नां नूं दस्स केहड़ी कूटे देवेंगा टंग, कि जूनीआं विच्च भवाईआ। नाले तूं कहाया मेरा आत्मा सदा साचा अनन्द, अनन्त अनन्त विच्च रखाईआ। की तूं वड्डा कि सुरसती जमना गंग, गंगोतरी दा भेव देणा खुल्लाईआ। की तीर्थ तट्ट किनारे आसा मनसा पूरी करन मंग, जीवत जीअ तेरे नाल मिलाईआ। कृष्न हस्स के किहा मेरे पिच्छों मेरी सिफ्त दा रह जाणा छन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोलिआं विच्च गाईआ। सच किसे नूं लभ्भणा नहीं ते जगत विहार विच्च जीवां जंतां फराउणा आपणा पिण्ड, ते पिण्डी दा मालक नज़र किसे ना आईआ। जिंनां चिर सतिगुरू ना बख्शे जो साख्यात होए बख़शिंद, बिना बख्शीश तों चुरासी तों बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। एह कलिजुग विच्च कलिजुग दा वरतिआ आपणा रंग, रंग विच्च रीती देणी बणाईआ। क्यों एसे लालच विच्च पंडतां विदवानां मेरे नाम दा गाउँदे रहणा छन्द, नमों नमों नमों कर के सीस झुकाईआ। मैं तालीम सिख्या विच्च कर चल्लया पाबन्द, बंधन देणा पाईआ। जिस वेले कलिजुग गिआ लघ, अन्त अख़ीर गुर अवतार पैगम्बरां दी पूरी करां मंग, पेशीनगोईआं सभ दीआं वेख वखाईआ। फेर आवां निरगुण धार जोत सरूप शाहो भूप बण सूरा सर्बंग, साहिब सुल्तान वेस वटाईआ। ओनां चिर एह पिण्डी पढ़ाउण दा, कुशा पढ़ाउण दा, ब्रह्म सूर बख्शंद नूं वड्डिआउणा दा लेखा आपणा ढंग, ढंग दे नाल डंग भुक्खयां दे देणे लँघाईआ। जिस वेले फेर आवां, आत्म परमात्म दा मरदंग वजावां, पारब्रह्म ब्रह्म इक्क वखावां, दीन मज़्ब ज़ात पात दा झगड़ा मुकावां, शत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्क रंग रंगावां, सदा अनन्द चित अनन्द अनन्द विच्च छुपावां, जिथ्थे नूरी जोत बिन वरन गोत, ना कोई बुद्धि ना कोई मन कल्पणा ना कोई अकल वाली सोच, समझ वाली समझ ना कोई रखाईआ। एह नहीं किसे दा दोश, सारे कृष्न दे अहिसान फरामोश, जिस ने सुणा के बैरूनी जगत वाला सलोक, सोहले ढोले मात विच्च जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बिन साहिब सतिगुर जगत क्रिया विच्चों पार ना कोई कराईआ।

(१४ चेत शै सं ५ मन्दर विच)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तिन्न कत्तक कहे वाह आ गिआ राम, सीता सति नाल वडयाईआ। उह प्रगटया काहन, राधा आपणे रंग रंगाईआ। मूसा पहुँचया आण, सजदा सीस इक्क झुकाईआ। ईसा आ के करे सलाम, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। पैगम्बर मुहम्मद दए पैग़ाम, संदेशा अगम्म अथाहीआ। नानक निरगुण सरगुण खेल महान, महिंमा कथ कथ दृढ़ाईआ। गोबिन्द चिल्ला लै कमान, तीर तरकश कंध टिकाईआ। मुखों हस्स के किहा खेल श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। जोती जाता हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शब्द संदेशा दित्ता भेव खुल्ह़ाया दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे मैं फड़िआ कमान तीर, तरकश वेख वखाईआ। संदेशा दित्ता बेनज़ीर, नज़र नज़रीआ दित्ता बदलाईआ। उह वेख कलिजुग अखीर, आखर दिआं दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट शरअ ज़ंजीर, बंधन सके ना कोई तुड़ाईआ। बदल सके ना कोई तकदीर, तदबीर विच्च कदे ना आईआ । फेर होका दित्ता कबीर, कूक कूक दित्ता सुणाईआ। रविदास पाटे चीथड़ वखा के (लीर), नैण अक्ख उठाईआ। नामे नेत्र वहाया नीर, हन्झ हार बणाईआ। शमस तबरेज मन्न के इक्को पीर, खल्ल खलड़ी दित्ती गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाणा इक्क दृढ़ाईआ।

कत्तक कहे मैं वेख्या इक्को करता, वारता धुरदरगाहीआ। ना जीवण ना मरदा, जीवत मरन ना रूप वखाईआ। आदि जुगादी मालक साचे घर दा, गृह मन्दर डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण रूप धरदा, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। आदि जुगादि शब्द खण्डा धार हो के लड़दा, झगड़ा करे थाउँ थाईंआ। निरवैर निरअक्खर धार हो के अक्खर पढ़दा, संदेशा नाम कलमा जणाईआ। नित नवित्त आपणा भाणा जरदा, सीस जगदीस निरगुण सरगुण आप झुकाईआ। जिस खेल करना कलिजुग कल दा, कल काती वेख वखाईआ। जो सति सरूप वेस वटाए अछल अछल्ल दा, वल छल आपणी कार कमाईआ। लहणा देणा जाणे जल थल दा, महीअल वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दा दीपक जोत अगम्मी बलदा, चार कुण्ट बैकुण्ठ करे रुशनाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर घल्लदा, हलकयां विच्च वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

कत्तक कहे राम आया नट्ठा, कृष्न पन्ध मुकाईआ। पैगम्बर हो इक्ठा, गुरू गुर सीस निवाईआ । लेखा कोई जाण ना सके आईजन तथा, यथार्थ समझ कोई ना आईआ। लोचन वेख ना सके अक्खां, नैण ना कोई उठाईआ। प्रभू भेव ना दित्ता रता, रतन अमोलक हीरे माण वडयाईआ । अन्तम आपणे नाल पकावे मता, मशवरा अवर ना कोई रखाईआ। जिस ने चार युग चलाया रथा, निरगुण सरगुण बण रथवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान चलाई कथा, अञ्जील कुरान राह वखाईआ। सो पुरख अकाला फिरे नट्ठा, दीन दयाला

भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं सभ दा वेखे पट्टा, पारब्रह्म प्रभ पड़दा लाहीआ। जिस विच्च दीन मज़हब दा रट्टा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड्ड वड्डयाईआ।

गोबिन्द कहे मैं तीर दी वेखी मुखी, मुख ब्रह्मा ध्यान लगाईआ। सृष्टी विच्च कोई ना सुखी, विष्नूं विश्व दित्ता दृढ़ाईआ । कूड़ कुड़िआर धार अज्जे ना मुक्की, शंकर फड़ के दित्ता समझाईआ। ममता जढ़ गई ना पुट्टी, अवतार पैगम्बर गए फेरीआं पाईआ। निरगुण धार मूल ना उठी, शास्त्र सिमरत वेद पुरान कर पढ़ाईआ। अमृत रस मिल्या ना घुट्टीं, अठ्ठ सठ तीर्थ पन्ध चुकाईआ। उठ सकी ना सुरती सुत्ती, हलूणा हक़ ना कोई लगाईआ। सुहञ्जणी होए कोई ना रुत्तीं, रुतड़ी रुत ना कोई महकाईआ। झगड़ा पिआ पंज तत्त बुतीं, बुतखाने देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ।

गोबिन्द कहे मैं तीर दा वेख्या निशाना, निशाना आपणा इक्क रखाईआ। मैनूं नज़री आया कृष्ना काहना, घनईआ आपणा रूप दरसाईआ। जिस ने कीता खेल महाना, त्रैलोकी नाथ वड्ड वड्डयाईआ। उस ने हुक्म संदेशा दित्ता अरजन जाणी जाणा, भेव अभेदा इक्क खुल्ह़ाईआ। फेर परभास तक्कया जिथ्थे सुंञ मसाणा, नगर खेड़ा नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे बधक मारया निशाना, चरन कँवल कँवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ।

गोबिन्द कहे बद्धक दा तीर अपारा, तुरीआ समझ कोई ना पाईआ। उहनूं घड़िआ नौं नौं वारां, अगनी भट्ठी विच्च तपाईआ। उहदी मुखी बणाई पेन्दू नाम सुनयारा, पिंजर तन वजूद हंढ्ढाईआ। जिस दी अन्तर हुंदी इक्क विचारा, विचर के सके ना किसे सुणाईआ। जे किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण होए सहाईआ। मेरी सेवा लए विच्च दरबारा, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचा इक्क वखाईआ।

सुनयार कहे मैं मुखी घड़िआ घाड़, घाड़त दए जणाईआ। उह दिन सी सतारां हाढ़, जिस वेले कुठाली रंग रंगाईआ। नौं वार सुहागा उत्ते फेरया प्रेम दी धार, नेत्र नैण नैण चमकाईआ। जे मंज़ूर करे निरँकार, करतार बेपरवाहीआ। ओस दा बद्धक नाल सी प्यार, गवांढ्ढी नावें घर दा नज़री आईआ। उह पहुँचया ओस बज़ार, खुशीआं विच्च पन्ध मुकाईआ। अग्गों हस्स के किहा सुनयार आ यार, मेरे पास आसण लै लगाईआ। आह वेख मेरा हथिआर, तेरे तीर दी मुखी दिआं बणाईआ। ओन्ह़ चिर नूं कृष्न ने अंदर दित्ता हुलार, मूरती आपणी दित्ती वखाईआ। एहदी मुखी तीर उत्ते चाढ़, नौं वार देणी दबाईआ। एस औणा विच्च उजाड़, जूह फेरा पाईआ। मैं सौणा चरन पसार, आप आपणी लै अंगढ़ाईआ। एह खेल होणा विच्च संसार, संसारी समझ कोई ना आईआ। तेरा लहणा

देणा पूरा करे करतार, कुदरत दा मालक पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

बद्धक किहा तैनूं तीर फड़ावां हत्थीं, हत्थ दित्ता टिकाईआ। सुनयार किहा मैं मुखी लावां चार मासे नौं रती, एह मेरी वंड वंडाईआ। अगली कथा कहाणी सची, सच दिआं समझाईआ। तेरा मेल होणा नाल ओस सभापती, जिस नूं सारे सीस निवाईआ। तूं खेल वेखणा अक्खीं, अक्खरां तों बाहर मेरी पढ़ाईआ। जिस ने प्यार कीता नाल सखी, सखीआं दा काहन सोभा पाईआ। उह तेरा राह रिहा तक्की, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। सज्जणा मैं तैनूं करदा पक्की, सच विच्च जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

तीर कहे मेरे उत्ते चढ़ गिआ कंचन रूप अपारा, अपरम्पर स्वामी दित्ती वडयाईआ। मेरे अंदर आया इशारा, सैनत रिहा लगाईआ। तेरा खेल होणा न्यारा, निरँकार आप कराईआ। की बद्धक करे बेचारा, विचर के सके ना कोई समझाईआ। एह खेल सची सरकारा, करनी दा करता आपणे हत्थ रखाईआ। जां वक्त सुहञ्जणा आए विच्च संसारा, लहणा देणा दए मुकाईआ । बद्धक चल्लया विच्च उजाड़ा, साथी आपणे नाल लिआईआ। कृष्न सुत्ता चरन पसारा, आप आपणी सोभा पाईआ। ओस मारया तीर करारा, पदम अदम विच्च जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

तीर मारया बद्धक, मिरग नैण जग जाण। खेल प्रभू दा अद्धक, कराए आप भगवान। हुक्म देवे सख्त, मेट सके ना कोई विच्च जहान। सुहञ्जणा होया वक्त, खेल होया महान। पूरी होई शर्त, राम निगहवान। लेखा मुकया फर्श, खुशी ज़िमीं असमान। नेड़े आया निधड़क, बल सूरबीर बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक्क सुणाईआ।

तिन्न कत्तक कहे बद्धक आ गिआ कोल, दब्बे दब्बे पैर टिकाईआ। सुरती होई अनभोल, भेव सक्कया ना कोई खुल्लाईआ। जां वेख्या आ के उपर धौल, लोचन दोए राह तकाईआ। कृष्न हस्स के पिआ बोल, फ़रमाणा इक्क जणाईआ। आ तोलां तेरा तोल, तराज़ू आपणा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

बद्धक वेख होया हैरान, हैरानी अन्तर आईआ। एह काहन श्री भगवान, कृष्न कृष्न सोभा पाईआ। मैं मूर्ख बड़ा नादान, तीर निशाना दित्ता लगाईआ। नेत्र हन्झ लग्गा वहाण, छहबर इक्क लगाईआ । कृष्न ने पकड़ के कान, हलूणा दे के ज़ोर नाल लगाईआ। आह वेख तेरा लेखा विच्च जहान, तैनूं दिआं दृढ़ाईआ। तीर दी मुखी उहदे

मस्तक छुहाई नाले दित्ता दान, दया आप कमाईआ। एस तीर दे नाल गोबिन्द ने गरीबां दी रक्खया करनी महान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। एस तीर दा लेखा नाल होवे विष्नूं भगवान, भगवन आपणा संग बणाईआ। शब्द गुरू जोधा सूर होवे बलवान, बलधारी इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

कृष्न किहा बद्धक उठ वेख मार झाकी, पड़दा दिआं उठाईआ। आह वेख गोबिन्द साकी, सच प्याला अमृत जाम प्याला रिहा प्याईआ। औह वेख अन्धेरी राती, साचा चन्द रिहा चमकाईआ। वेस वटा के कमलापाती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। आपणी खेल देवां दाती, दाता हो के दया कमाईआ। कलिजुग अन्त तेरा जन्म होवे साख्याती, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एह जेहड़े तेरे नाल साथी, उहनां मानस देही मिले वडयाईआ। तूं मन्नणी मेरी आखी, निम्रता विच्च सीस झुकाईआ। मेल मिलावे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ । पूरा करे मेरा वाकी, वाक्फकार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

कृष्न किहा बद्धक अन्तर ना कर रंज, रंजश दी लोड़ रही ना राईआ। कृष्न ने नेत्र दबा के किहा अग्गे वेख सम्मत शहनशाही पंज, पंज धार तों परे दृढ़ाईआ। जिस वेले कोई मुहाणा रिहा ना वंञ, पत्तन पार ना कोई कराईआ। दीन दुनी होणी अन्ध, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। दीन दयाल होणा बख्शंद, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। तेरे साथीआं नूं पौणा तन्द, जोड़ी आपणे नाल जुड़ाईआ। साहिब सुल्तान हो बख्शंद, सच सिँघासण सोभा पाईआ। ओस वेले उहदिआं सन्तां भगतां दी छब्बी पोह नूं चढ़ के औणी जंञ, लाड़े सारे नज़री आईआ। गोबिन्द ने गोबिन्द दी धार वेखणा रंग, रंगत इक्को दए वखाईआ। तख्त निवासी तख्त दे उत्ते बैठ के एहो तीर तैथों लैणा मंग, सज्जे हत्थ नाल सज्जे हत्थ देणा फड़ाईआ। फेर ज़रूर कलिजुग अन्त सृष्टी विच्च होवे जंग, जगह जगह होवे लड़ाईआ। अगला लेखा छब्बी पोह नूं दए वंड, भेव सारा दए खुलाईआ। जिस ने खेल खेलया पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सो स्वामी लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आवे लँघ, सच दवारा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे विच्च वरभंड, वरभंडी आपणा हुक्म वरताईआ। (३ कत्तक शै सं ५ सूबेदार राम सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆